लोकसंगीत और संस्कृति

डॉ० अनामिका दीक्षित*

संस्कृति और सभ्यता शब्दों का प्रयोग प्रायः बहु अर्थों में प्रयोग किया जाता है इन शब्दों का चयन प्रायः उन तथ्यों पर किया जाता है जिनमें उनकी विशेष रूचि रहती है संस्कृति को विशेषकर सामाजिक परम्परा के नाम से जाना जाता है उनके अनुसार वे सब चीजें जो मनुष्य के पास है वह सब जो कहते है और वो जो सोचते है वह है संस्कृति। संस्कृति शब्द धातु सम् उपसर्ग और कृतन प्रत्यय लगाने से बनता है। भारतीय संस्कृति की गणना विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में होती है भारतीय संस्कृतियों में साधना के अनेक मार्ग बताये है जैसे ज्ञान शक्ति कर्म कला आदि अपनी अपनी अभिरूचि के अनुसार व्यक्ति अपनी अध्यात्म साधना करता है और संगीत कला को तो ईश्वरोपासना का सर्वश्रेष्ठ साधन माना गया है मन की एकाग्रता का सरलतम तरीका है परमात्मा के नाम का स्मरण करना। ओम ओंकार अक्षर बिन्दु है परमात्मा भी अक्षर है संम्पूर्ण वाक् का प्रतीक है अ से वाणी प्रारम्भ होती है और म पर समाप्त ओंकार के निरन्तर उच्चारण से ध्वनि मानों हमारे शरीर की आत्मा रूपी दीवार से टकराकर प्रति ध्वनि उत्पन्न करती है तो अनहदनाद उत्पन्न होता है इसी नाद से देवता की स्तुति की जाती है तो वह प्रणव कहलाता है परन्तु आधुनिक युग में सर्वे गुणाः कान्चमाश्रयन्ते' अर्थात सारे गुण कांचन स्वर्ण धन में ही आश्रित होते है यह व्यंग्योक्ति अक्षरशः सत्य चरितार्थ होती है क्योंकि भौतिक उपलब्धियों की आपाधापी के इस युग में अर्थ प्रधान संस्कृति के दौर में अधिकाधिक धन प्राप्ति के लोभ में मनुष्य धन के चक्कर में फंसता जा रहा है मानव जीवन में धन का महत्वपूर्ण स्थान था और हमेशा रहेगा।

भारतीय संगीत का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है इसका समारम्भ वैदिक काल से ही माना जाता रहा है जितनी प्राचीन हमारे देश की सभ्यता और संस्कृति है उतना ही विस्तृत एवं विशाल यहां के संगीत का अतीत है। जो सभ्यता और संस्कृति में सम्पूर्ण विश्व में अग्रणी रहा है जो अपने चमत्कारपूर्ण बौद्विक कौशल से सम्पूर्ण विश्व को चमत्कृत करता रहा है जितनी गौरवमयी यहां की सभ्यता और संस्कृति रही है उतना ही महान यहां का संगीत भी है।

संगीत की उत्पत्ति मानव मन में आने वाले विभिन्न भावों से हुई है संगीत मानव की एक आवश्यकता है प्रसिद्ध लेखक एवं साहित्यकार रामवृक्ष बेनीपुरी जी ने अपने लेख गेंहू और गुलाब में लिखा है जब तन की भूख शान्त हो गई तो मन की भूख लगी इसी मन की भूख से ललित कलायें जन्मी और ललित कलाओं में सर्वोपरि है संगीत।

अत्यन्त प्रसन्नता के क्षणों में हमारे हाथ पैर स्वयं नर्तन करने लगते है। लोक संगीत साधारण जनता का स्वाभाविक संगीत है यह उसी जाति या समाज की विशेष कृति होती है जो इसे जन्म देती है यह उसकी जातिगत अथवा समाजगत विशिष्टताओं का प्राकृतिक प्रकटीकरण है जनमानस में प्रचलित परम्परा को ही लोक संगीत का नाम दिया गया है

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर संगीत वाद्य विभाग आर्य महिला (पी.जी.) कालेज चेतगंज वाराणसी

संगीत तो मानव जीवन के जन्म से ही जुड़ा होता है बच्चे के जन्म लेते ही सोहर आदि मंगल गीतों को गाने की परम्परा हमारी संस्कृति का द्योतक है।

लोक संगीत में आनन्द उत्साह तथा रस निष्पत्ति में लोक वाद्यों का विशेष महत्व रहा है जैसेः ढोलक, खजरी, झांझ, मजीरे इत्यादि लयकारी जो समा बांध देते है उसमें जनमानस पूरी तरह डूब जाता है लोक वाद्यों में रसोत्पत्ति की क्षमता परिमाण में विद्यमान रहती है अपने आप ही बरबस विवश होकर नृत्य करने को आतुर मन रोक नही पाता लोक संगीत की धुनों ने प्रबुद्ध शास्त्रीय गायक वादक के मन को भी झंकृत कर दिया है इसलिये गायक वादक कार्यक्रम के अन्त मे चैती, कजरी, भटियाली, डोगरी, पहाड़ी, हीर इत्यादि पर आधारित धुनों का प्रदर्शन करते है वाद्यवृन्द में भी लोक गीतों और लोक संगीत का महत्वपूर्ण योगदान है।

शास्त्रीय संगीत में कुछ रागों का सृजन तो लोक धुनों के आधार पर ही हुआ है जैसे पहाडी–कॉफी जंगला भैरवी सिन्धु भैरवी बरवा पीलू गारा इत्यादि बहुधा इन रागों में ठुमरी दादरा ही प्रस्तुत किया जाता है। जन साधारण द्वारा अपने मनोरंजन के लिये किसी कला का बिना किन्ही विशेष नियमों का ध्यान रखे उसे स्वाभाविक एवं प्राकृतिक रूप का प्रयोग किया जाता है तो उस कला को लोक कला की संज्ञा प्रदान कर दी जाती है निरन्तर विकास के फलस्वरूप जब उसमें कुछ शास्त्रोक्त परिवर्तन किये जाते है तब उनका शास्त्रीय रूप भी सामने आ जाता है संगीत कला का जो रूप आदि मानव द्वारा प्रयोग में लाया गया वह उसका सहज रूप था जो कालान्तर में लोक संगीत के नाम से जाना जाने लगा।

प्राकृतिक संगीत ही लोकगीतों की परिभाषा है जब मानव पूर्ण रूप से परिष्कृत नही था उस समय वह अपने उद्‌गारों को प्रकृट करने के लिये वाणी द्वारा कुछ अस्पष्ट शब्दों को उच्चारण करता था उस समय वही वाणी उसकी कविता और वही अस्पष्ट शब्द अथवा ध्वनियुक्त स्फुरण उसका संगीत होता था।

लोक संगीत का विकास मानव के प्रारम्भिक विकास के साथ ही हो गया था इसलिये इस संगीत का इतिहास उतना ही पुरातन है जितना कि मानव का। लोक संगीत की रचना लोक तथा संगीत इन दो शब्दों के संयोग से हुई है संगीत का व्यवहार अपने वास्तविक एवं बहुव्यवहारित अर्थ में प्रयुक्त हुआ है किन्तु लोक शब्द पर चिन्तन करना आवश्यक है क्योंकि लोक शब्द से इसे केवल ग्रामीण अंचल में गाये जाने वाला संगीत समझते है परन्तु लोक मनुष्य समाज का वह वर्ग है जो सभी अभिजात्य संस्कार शास्त्रीयता पाण्डित्य की चेतना और पाण्डित्य के अहंकार से शून्य है जो एक परम्परा के प्रवाह में जीवित रहता है।

निःसन्देह लोक संगीत मूल रूप से आडम्बर रहित होने के कारण कृत्रिम वाद्यों की अपेक्षा नही करता वरन् परिस्थिति विशेष में उपलब्ध साधनों द्वारा ही स्वतः उत्पन्न रूप से लय तथा ताल आदि का निर्वाह कर लेता है धोबी अपने कपड़े की फट फट की आवाज में अपने गीत के लिये लय बना लेता है गाड़ी हाकने वाला बैलों घंटिया और घोडों की टाप की आवाज से ही अपने गान को लयबद्ध कर लेता है इसी पर संगीत निर्देशक ओ. पी. नैयर साहब जी का संगीत बहुत लोकप्रिय हुआ है ये ही सात स्वरों की सत्ता को सभी ने किसी न किसी रूप में स्वीकार किया है संगीत मनुष्य के जन्म से मृत्यु तक जुड़ा रहता है भारत अनेकता में एकता की एक अनूठी मिसाल है यह एक ऐसा गणतंत्र देश है जहां जाति धर्म भाषा संस्कृति की अनेक विविधतायें है।

विज्ञान और संगीत

बीसवीं शताब्दी को विज्ञान का युग कहा गया है इस शताब्दी में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बड़ी ही तीव्रता से परिवर्तन हुये है स्वतन्त्रता के कारण राजनैतिक सामाजिक सांस्कृतिक शैक्षिक गतिविधियों में भी परिवर्तन हुये है परन्तु वैज्ञानिक परिवर्तनों को इस सदी की महान उपलब्धि कहा जायेगा, वैज्ञानिकता ने जैसे मनुष्य जीवन के सभी सामान्य पक्षों को प्रभावित किया है वही भारतीय संस्कृति कला एवं संगीत पर भी बहुतायत से प्रभाव पड़ा है संगीत के क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रभाव पड़ने के कारण इसके प्रचार प्रसार के साधन सुलभ हो गये जिसके कारण संगीत कला की शिक्षा प्रदर्शन और सभी चीजों में परिवर्तन हुआ और संगीत घरानों के सीमित दायरे से निकलकर जनसाधारण तक सुगमतपूर्वक पहुंच सकी भारत में ब्रिटिश सत्ता के स्थापित हो जाने पर हिन्दुस्तानी संगीत को देशी रजवाडों में आश्रय प्राप्त था अर्थात कलायें केवल किलों में कैद होकर रह गई संगीत शिक्षा जनसाधारण तक सुगमतापूर्वक पहुंच सके इसलिये बुद्विजीवी स्तर दिलाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध से प्रारम्भ होकर बीसवी शताब्दी के पूर्वा तक का समय सामूहिक शिक्षण संस्थाओं की नींव मजबूत करने समाज के अन्तर्गत संगीत शिक्षा के प्रति जो गृत होने संगीत की प्रतिष्ठा बढ़ाने संगीत कलाकारों को उचित सम्मान प्राप्त कराने हेतु योग्य सिद्ध हुआ। इसके पहले संगीत में कोई स्वरलिपि प्रचलित नही थी मौलाबक्श घिस्से खां ने स्टाफ नोटेशन परिचय के पश्चात हिन्दुस्तानी संगीत में भी स्वर लेखन के कार्य को कार्यान्वित किया तथा संगीत को लेखनी बद्ध करके पुस्तक में बांधने कार्य भी किया। पुस्तक का प्रकाशन वैज्ञानिक सुविधाओं के आधार पर ही सम्भव हो सका। प्रचार प्रसार के माध्यमों में तकनीकी उपकरणों के साथ पुस्तकों की छपाई प्रिंटिग प्रेस की सुविधा से संगीत जगत में एक नई दिशा को जन्म दिया अभी तक संगीत की शिक्षा मौखिक ही प्रदान की जाती थी वही अब लिखित विद्या से भी प्रदान होने लगी। 20वीं शताब्दी के पूर्वा में विज्ञान ने कई आविष्कार किये परन्तु संगीत के प्रचार प्रसार उसके संरक्षण एवं उसे सुरक्षित रखने के लिये जिन उपकरणों या यंत्रों का प्रयोग हुआ वो इसी सदी की देन है के ग्रामोफोन कारण उस समय के गायक कलाकारों की क्या गायन शैली या विशेषतायें रही या आज गायन में कितना कुछ अन्तर हो गया है इन सबका ज्ञान हमें प्राप्त होता है। ये विज्ञाान की ऐसी देन है जिससे कलाकार की कला को वर्षों तक सुरक्षित रखना सम्भव हो सका इसके पश्चात एक ओर वैज्ञानिक कृति सामने आयी जिसने भारतीय शास्त्रीय संगीत जगत में ही नही वरन पूरे विश्व में क्रान्ति कर ली वो था रेडियो का आगमन। आकाशवाणी का उद्देश्य जनता के मनोरंजन और उन्हें शिक्षित करने के लिये अच्छे कार्यक्रमों का प्रसारण करना। आकाशवाणी एक सशक्त माध्यम था शास्त्रीय संगीत को जनज न तक पहुचानें में। एक चमत्कार सा ही लगने लगा कि कोई कलाकार मुम्बई में गा रहा है और उसे दिल्ली या अन्यत्र भी सुना जा सके। रेड़ियो के पश्चात टेलीविजन का विकास तो स्वाभाविक ही था परन्तु चित्रपट का वैज्ञानिक आविष्कार किसी चमत्कार से कम न था इस समय जहां विज्ञान के आविष्कार से मानव जीवन का प्रत्येक क्षेत्र प्रभावित हो रहा था वही ग्रामोफोन रिकाडस आकाशवाणी जैसे चमत्कारों से संगीत कला का प्रभावित होना स्वाभाविक था। इन उपकरणों के माध्यम से संगीत को सुनने एवं उसको सुरक्षित रखने के प्रयास किये जा रहे थे किन्तु इन उपकरणों का प्रयोग उस समय तक गायक वादक अभ्यास पद्वति में एवं मंच प्रदर्शन के कार्यक्रमों में प्रयोग नही करते थे परन्तु कही कही ध्वनि विस्तारक यंत्र माइक माइक्रोफोन का प्रयोग बड़ी बड़ी महफिलों क्रान्फ्रेन्सों

के लिये किया जाने लगा। कालान्तर में गायन के कार्यक्रम मंच पर ज्यादा प्रदर्शित होते थे उनकी अपेक्षा में वादक अपना कार्यक्रम मंच पर उतने अधिक प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर पाने में सक्षम नही थे क्योंकि इन वाद्यों का स्वर अपेक्षा कृत धीमा होता है और उसे दूर तक नही सुना जा सकता है किन्तु माइक्रोफोन के कारण तत और सुशिर वाद्यों का प्रभाव एकदम बढ़ गया और ये वाद्य मंच पर बहुतायत से प्रयोग होने लगे ध्वनि विस्तारक यंत्र इनके लिये वरदान साबित हुये। वर्तमान काल में अति सूक्ष्म माइक्रोफोन वाद्यों में लगाकर कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते है जिसके माध्यम से वाद्यों के ध्वन्यात्मक सौन्दर्य में पहले की अपेक्षा अधिक वृद्धि हुई हैं। ध्वनि विस्तारक यंत्रों में माइक्रोफोन आडियो एम्पलीफायर टांजिस्टर एम्पलीफायर के रूप में बहुत विकसित हुआ अब उसका प्रचार प्रत्येक संगीत सभा में बहुतायत से होने लगा वैज्ञानिक आविष्कारों ने कुछ अन्य उपकरणों को प्रयोग में लाया जिनका उपयोग सांगितिक गतिविधियों में ही प्रयोग हुआ और जो वैज्ञानिक युग की ही देन है ये उपकरण संगत तथा रियाज के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुये है इनमें विद्युतीय तानपुरा तालमाला स्वरपेटी लहरा मशीन इत्यादि वाद्यों का विशेष स्थान है इसके अतिरिक्त सिंथेसाइजर का प्रयोग पाश्चात्य संगीत में होता था परन्तु हिन्दुस्तानी संगीत में भी इसका प्रयोग हो रहा है वर्तमान में नये सिंथेसाइजर डिजिटल टेक्नोलाजी से बन रहे है इसमे हर प्रकार के वाद्यों की आवाज पैदा की जा सकती है तथा ये कई वाद्यों की मिली जुली ध्वनि उत्पन्न करने में सक्षम है जिनकी कल्पना करना भी कठिन है ये विज्ञान की ही प्रगति है जिसने हमारे भारतीय शास्त्रीय संगीत को बहुत कुछ वरदान दिया है इससे हम यह कह सकते है कि विज्ञान का परस्पर सहयोग होने पर संगीत की ख्याति चरमोत्कर्ष पर है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. भारतीय संस्कृति के मूलाधार।
2. भारतीय संस्कृति विविध आयाम।
3. संगीत विशारद।
4. धार्मिक परम्परायें एवं हिन्दुस्तानी संगीत।